सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2023 का द्वितीय अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् विश्वावसु गौड़ द्वारा लिखित 'Importance of Swasthavritta for Healthy Life' शोधलेख में स्वास्थ्य चेतना के संदर्भ में आयुर्विज्ञान के विविध मतों का प्रतिपादन करते हुए स्वास्थ्य संरक्षण हेतु विभिन्न उपाय निर्दिष्ट किये गये हैं। डॉ. सुषमा सिंघवी द्वारा लिखित 'जैन-दर्शन वेदविरोधी नहीं' लेख में जैन दर्शन एवं वैदिक दर्शन परम्परा के विषय में प्रचलित भ्रान्त धारणाओं का निराकरण करते हुए दोनो परम्पराओं का समान महत्त्व दर्शाया गया है। डॉ. सरोज कोचर द्वारा लिखित 'आदि तीर्थङ्कर भगवान् ऋषभदेव'लेख में ऋषभदेव के जीवन, शासन एवं अवदान को प्रमाणिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। तत्पश्चात् डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा के 'पुस्तक समीक्षा - विश्वेश्वर स्मृतिः' समीक्षात्मक लेख में आधुनिक स्मृतिकार पं. विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित विश्वेश्वर स्मृति ग्रन्थ की उपयोगिता एवं युगानुरूप धर्म प्रवर्तन के सन्दर्भ में महत्ता को मुल्यांकित किया गया है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा